# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

**डॉ० शारदा प्रसाद सिंह**

विभागाध्यक्ष (बी० एड०)
रघुवीर महाविद्यालय, थलोई
जौनपुर

**प्रस्तावना**

बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने ज्ञान तथा विज्ञान का प्रसार किया और इसका एक भयावह पक्ष यह उभर रहा है कि शिक्षा व्यक्ति केन्द्रित होती जा रही है इसके परिणामस्वरूप एक सुखद समाज के निर्माण में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। सूचना क्रान्ति ने शिक्षा का बाजारीकरण कर दिया है। परिणामतः शिक्षक, विद्यार्थी तथा पाठ्यक्रम की शाश्वत अवधारणायें, दुकानदार, खरीददार तथा वस्तु के रूप में बदल रही है। यह कितना विडम्बना पूर्ण है कि जिन देशों से यह अवधारणा आयात हो रही है वे स्वयं हमारी अवधारणाओं को अपना रहे हैं। वे मानव जीवन के सुन्दर, शाश्वत पक्ष के साथ वरण करने को लालायित हैं ।

शिक्षा मानव के गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है इसके द्वारा मानव की अन्तर्निहित योग्यताओं को विकसित करके समाज सम्मत बनाया जाता है यहाँ स्वाभाविक रूप से कुछ प्रश्न उठते हैं– क्या बालक को जो कुछ वह है उसी रूप में विकसित किया जाना चाहिए? यह उसे हजारों वर्षों की सांस्कृतिक–सामाजिक विरासत के मानदण्डों के अनुसार विकसित कर स्वस्थ समाज की रचना में योग देना चाहिए । इसका सीधा सा उत्तर है – व्यक्ति तथा समाज दोनों सापेक्ष हैं एक दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है । अतः व्यक्ति की शिक्षा इस प्रकार की हो कि वह अपने गुणों का उपयोग अपने विकास तथा समाजोत्थान के लिए करें। करने की यह प्रक्रिया शिक्षण पर आधारित है।

शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में अनेक नवीन प्रत्ययों तथा नवाचारों का प्रादुर्भाव हुआ है। इनमें से कुछ प्रत्यय अत्यन्त महत्वपूर्ण एक समसायिक हैं तथा शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्यरत विद्वतजनों ने इनको अंगीकृत कर लिया है। अतः शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिये इन प्रत्ययों तथा नवाचारों का ज्ञान एवं उनमें निपुणता प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है ।

मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में संरचनात्मक व योगात्मक मूल्यांकन, सामान्यीकृत व इप्सेटिव मापन, निकष संदर्भित व मानक संदर्भित मापन सतत आन्तरिक मूल्यांकन, प्रश्न बैंक, खुली पुस्तक परीक्षा प्रणाली, कम्प्यूटरों के उपयोग प्राप्तांकों का परिमापन, परीक्षा में पारदर्शिता तथा सार्वजनिक परीक्षाओं का प्रमापीकरण जैसे नवाचारों पर विशेष जोर दिया जा रहा है। निःसन्देह ये नवाचार वर्तमान में प्रचलित विभिन्न परिपाटियों एवं साधनों की कमियों को दूर किया जा सकता है । मापन तथा

मूल्यांकन के क्षेत्र में व्याप्त दोष इनको अपनाने से काफी सीमा तक कम हो सकेंगे एवं छात्रों की योग्यताओं का मापन अधिक वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध ढंग से करना सम्भव हो सकेगा।

शैक्षिक मूल्यांकन से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र की विभिन्न वस्तुओं अथवा प्रक्रियाओं जैसे शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण, शिक्षा उद्देश्य, शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षा सामग्री इत्यादि की वांछनीयता को ज्ञात करने की प्रक्रिया से है। निःसंदेह मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य शैक्षिक निर्णय लेने में सहायता करता है। अतः शैक्षिक मूल्यांकन कर्ता का अन्तिम लक्ष्य शिक्षा में सुधार लाना है।

पूर्वनिर्मित शैक्षिक कार्यक्रम, योजना या सामग्री की समग्र वांछनीयता को ज्ञात करने की प्रक्रिया से है। दूसरे शब्दों में, योगात्मक मुल्यांकनकर्ता किसी शैक्षिक कार्यक्रम, योजना या सामग्री के गुण व दोषों की जानकारी इसलिए करता है जिससे उसे कार्यक्रम, योजना, सामग्री को स्वीकार करने या भविष्य में जारी रखने के सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सके ।

अध्यापकगण दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक परीक्षाओं के द्वारा अपने छात्रों के ज्ञान, बोध कौशल का मापन करते थे तथा उन्हें सुधार हेतु आवश्यक पृष्ठ पोषण प्रदान करते थे। अध्यापकों की निष्ठा, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता एवं विकास के आधार पर एक लम्बे समय तक इन परीक्षाओं को सामाजिक स्वीकृति मिलती रही।

प्रश्न बैंकों के निर्माण का उद्देश्य जहाँ एक ओर प्रश्नपत्र निर्माता को प्रश्न तैयार करने में सहायता करना है वहीं साथ ही साथ अध्यापकों तथा छात्रों को शिक्षण–अधिगम में सहयोग करना भी है।

प्रायः वार्षिक, द्विवार्षिक त्रिवार्षिक अथवा चतुर्वावार्षिक स्तर पर किया जाता है जैसे बी.एड. व एम. एड. के पाठ्यक्रम प्रायः एक वर्षीय होते हैं। हाईस्कूल इंटरमीडिएट व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रायः द्वि–वर्षीय होते हैं, स्नातक पाठ्यक्रम प्रायः त्रिवर्षीय होते हैं जबकि चिकित्सा व अभियांत्रिकी के पाठ्यक्रम प्रायः चार अथवा पाँच वर्षीय होते है। सामान्यतः इस प्रकार के सभी पाठ्यक्रमों में मुख्य परीक्षा का आयोजन वार्षिक अभावा द्विवार्षिक स्तर पर किया जाता है, इन परीक्षाओं के द्वारा सम्पूर्ण वर्ष अथवा दो वर्ष, जैसे भी स्थित हो, की अवधि में छात्रों के द्वारा अध्ययन किये गये पाठ्यक्रम में उनके ज्ञान, बोध व कौशल आदि का मूल्यांकन किया जाता है।

सेमेस्टर प्रणाली वर्तमान में प्रचलित वार्षिक प्रणाली की कमियों को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम प्रतीत होता है। सेमेस्टर वार्षिक प्रणाली के अनेक लाभ हैं। सेमेस्टर प्रणालीश में सत्र की अवधि कम होने के कारण छात्रों को सम्पूर्ण सेमेस्टर अध्ययनरत रहना पड़ता है। लगातार गहन अध्ययन करने के फलस्वरूप उनमें विषयवस्तु की समझ के साथ–साथ आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

सभी क्रियाकलाप पारदर्शित के साथ संचालित होने चाहिए। पुनर्मूल्यांकन, पुनर्योग तथा पुनर्परीक्षा के साथ–साथ परीक्षा परिणाम घोषित हो जाने के उपरान्त परीक्षकों के नाम सार्वजनिक कर देना अथवा श्रेष्ठतम व निम्नतम अंक पाने वाले कुछ परीक्षार्थियों की उत्तरपुस्तिकाओं की फोटोस्टेट प्रतियां सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराने जैसे कुछ नूतन कार्य सरलता से किए जा सकते हैं। इनसे परीक्षा

में पारदर्शिता आने के साथ–साथ छात्रों एवं अभिभावकों का विश्वास परीक्षा प्रणाली में पुनर्स्थापित हो सकने में सहायता मिल सकेगी।

शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में अनेक नवीन प्रत्ययों तथा नवाचारों का प्रादुर्भाव हुआ है। इनमें से कुछ प्रत्यय अत्यन्त महत्वपूर्ण एक समसायिक हैं तथा शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्यरत विद्वतजनों ने इनको अंगीकृत कर लिया है। अतः शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिये इन प्रत्ययों तथा नवाचारों का ज्ञान एवं उनमें निपुणता प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है । शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के कुछ प्रमुख नवीन नवाचार निम्न है–

1. संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन
2. सामान्यीकृत तथा इप्सेटिव मापन
3. निष्कर्ष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मापन
4. सतत आन्तरिक मूल्यांकन
5. प्रश्न बैंक
6. खुली पुस्तक परीक्षा
7. सेमेस्टर प्रणाली
8. प्राप्तांकों का परिमापन
9. परीक्षा में कम्प्यूटर का उपयोग 10. ग्रेड प्रणाली
11. परीक्षाओं में पारदर्शिता
12. सार्वजनिक परीक्षाओं का प्रमापीकरण

विकास के आधुनिक युग में राष्ट्र की बौद्धिक सम्पदा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। निरन्तर प्रगतिशील विश्व में रोजगारपरक शिक्षा का महत्व निर्विवाद रूप से स्थापित सत्य है। नवाचार मनुष्य के दृष्टिकोणों के धनात्मक अथवा ऋणात्मक स्वरूप को प्रदर्शित करती है, विद्यार्थियों के शैक्षणिक क्षमता के मापन तथा मूल्यांकन के लिए अनेक नवीन प्रत्ययों तथा नवाचारों का प्रादुर्भाव होता है। शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिये इन प्रत्ययों तथा नवाचारों का ज्ञान एवं उनमें निपुणता प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। आज शिक्षा एक व्यवसायिक पद्धति हो गयी है जिससे विद्यार्थियों की शिक्षा काफी प्रभावित हो रही है। आज देश में बेरोजगारी इतनी ज्यादा व्याप्त हो गई है जिससे लोगों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ लगी हुई है तथा जो विद्यार्थी कुशल है उन्हें पीछे रहना पड़ रहा है क्योंकि भ्रष्टाचार इतना ज्यादा है कि लोग पैसा, पहचान एवं अन्य साधनों से नौकरी पा रहे है और जो अच्छे विद्यार्थी है वो पीछे ही रह जा रहे है। आज की सरकारी रोजगार परीक्षा में लोग पहचान वं पैसा के जोर पर नौकरी पा रहे है। इन समस्याओं को देखते हुए अध्ययनकर्ता द्वारा ने अध्यापकों द्वारा अनेक सहायक नवाचारों का प्रयोग

करके विद्यार्थियों को शिक्षा में निपुण करने का प्रयास किया है। परिणामतः छात्रों में धनात्मक अभिवृत्ति का विकास हो सके।

**समस्या कथन**

प्रस्तुत समस्या को निम्नवत शीर्षकबद्ध किया गया है–

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र – छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र – छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएँ**

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएँ बनाई गई है –

1. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र – छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर है।

**अध्ययन विधि–**

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाता है। सर्वेक्षण को समझ लेना यहां आवश्यक प्रतीत होता है।

**जनसंख्या :–**

जौनपुर के शहरी माध्यमिक विद्यालयों के 50 छात्र एवं 50 छात्राएँ तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के 50 छात्र एवं 50 छात्राएँ को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

**न्यादर्श**

इसके लिए जौनपुर में संचालित शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया है। पुनः शहरी माध्यमिक विद्यालयों से 50–50 छात्र–छात्राओं तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों से 50–50

छात्र–छात्राओं का चयन सोद्देश्य न्यादर्शन विधि से किया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के कुल 200 छात्र–छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

**उपकरण :–**

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली "नवाचार के प्रति अभिवृत्ति मापनी" का प्रयोग शोध–उपकरण के रुप में किया गया है।

यह अभिवृत्ति मापनी नवाचार के प्रति अभिवृत्ति के लिए 50 लड़के तथा 50 लड़कियाँ यदृच्छिक विधि से कुल 2 माध्यमिक विद्यालयों (शहरी एवं ग्रामीण) से चुनी गयी इस मापनी में नवाचार से सम्बन्धित कथन रखे गये हैं, ये कथन नकारात्मक तथा सकारात्मक अभिवृत्ति से सम्बन्धित है।

**प्रयुक्त सांख्यिकी –**

प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी. मान ज्ञात किया गया है। आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

$H_1$ = माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

$H_{01}$ = माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या 1**

माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन, t–मान) का मान

| क्र.सं. | चर | संख्या (N) | मध्यमान (N) | मानक विचनल (S.D.) | t- मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शहरी छात्र | 50 | 63 | 10.9 | 1.88 | असार्थक |
| 2 | शहरी छात्राएं | 50 | 67.2 | 12.7 | | |

तालिका सं0 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि t का परिकलित मान 1.88 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा गुक्तांश 98 पर 1 परीक्षण के सारणी मान 1.98 से कम है। अतः मध्यमानों के बीच अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ($H_{01}$) स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना ($H_1$) को निरस्त किया जाता है अर्थात् माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रदृछात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्श त्रुटि के कारण है ।

$H_2$ = माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

$H_{02}$ = माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या 2**

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र – छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन, t–मान) का मान

| क्र.सं. | चर | संख्या (N) | मध्यमान (N) | मानक विचनल (S.D.) | t- मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ग्रामीण छात्र | 50 | 148.10 | 19.80 | 1.00 | असार्थक |
| 2 | ग्रामीण छात्राएं | 50 | 152.10 | 19.99 | | |

तालिका सं0 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ज का परिकलित मान 1.00 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 98 पर परीक्षण के सारणी मान 1.98 से कम है। अतः मध्यमानों के बीच अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ($H_{02}$) स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना ($H_2$) को निरस्त किया जाता है अर्थात् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र–छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्श त्रुटि के कारण है।

$H_3$ = माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

$H_{03}$ = माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या 3**

माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन, t–मान) का मान

| क्र.सं. | चर | संख्या (N) | मध्यमान (N) | मानक विचनल (S.D.) | t- मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शहरी छात्र | 14 | 150.64 | 19.90 | 1.05 | असार्थक |
| 2 | ग्रामीण छात्र | 23 | 150.33 | 19.10 | | |

तालिका सं0 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 1 का परिकलित मान 0.05 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा गुक्तांश 35 पर परीक्षण के सारणी मान 2.72 से कम है । अतः मध्यमानों के बीच अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ($H_{03}$) स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना ($H_3$) को निरस्त किया जाता है अर्थात् माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्श त्रुटि के कारण है।

$H_4$ = माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है ।

$H_{04}$ = माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या 4**

माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक विचलन, t–मान) का मान

| क्र.सं. | चर | संख्या (N) | मध्यमान (N) | मानक विचनल | t- मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | (S.D.) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शहरी छात्राएं | 20 | 154.10 | 19.20 | 0.15 | असार्थक |
| 2 | ग्रामीण छात्राएं | 16 | 153.13 | 19.50 | | |

तालिका सं0 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि t का परिकलित मान 0.15 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 24 पर ज परीक्षण के सारणी मान 2.72 से कम है। अतः मध्यमानों के वीच अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ($H_{04}$) स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना ($H_4$) को निरस्त किया जाता है अर्थात् माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्श त्रुटि के कारण है।

**निष्कर्ष–**

प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षण के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए –

1. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र – छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र – छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही होता है ।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का नवाचार के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

**निहितार्थ–**

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों में नवाचार के प्रति गम्भीर नहीं है जो कि अत्यन्त सोचनीय विषय है। नवाचार में मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में संरचनात्मक व योगात्मक मूल्यांकन, सामान्यीकृत व इप्सेटिव मापन, निकष संदर्भित व मानक संदर्भित मापन आन्तरिक मूल्यांकन, प्रश्न बैंक, खुली पुस्तक परीक्षा प्रणाली, कम्प्यूटरों के उपयोग, प्राप्तांकों का परिमापन, परीक्षा में पारदर्शिता तथा सार्वजनिक परीक्षाओं का प्रमापीकरण जैसे नवाचारों पर विशेष जोर दिया जा रहा है। निःसन्देह ये नवाचार वर्तमान में प्रचलित विभिन्न परिपाटियों एवं साधनों की कमियों को दूर किया जा सकता है। मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में व्याप्त दोष इनको अपनाने से काफी सीमा तक कम हो सकेंगे एवं छात्रों की योग्यताओं का मापन अधिक वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध ढंग से करना सम्भव हो सकेगा किंक्षा अध्यापक सामान्यत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करने में ही अधिक रूचि रखता है।

विगत कुछ दशकों में गापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में संरचनात्मक व योगात्मक मूल्यांकन, सामान्यीकृत व इप्सेटिव मापन, निकष संदर्भित व मानक संदर्भित मापन, सतत् आन्तरिक मूल्यांकन, प्रश्न बैंक, खुली पुस्तक परीक्षा प्रणाली, सेमेस्टर प्रणाली, कम्प्यूटरों के उपयोग, प्राप्तांकों का परिमापन, परीक्षा में पारदर्शिता तथा सार्वजनिक परीक्षाओं का प्रमापीकरण जैसे नवाचारों पर विशेष जोर दिया जा

रहा है। निःसन्देह ये नवाचार वर्तमान में प्रचलित विभिन्न परिपाटियों एवं साधनों की कमियों को दूर करने की दृष्टि से विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किये गये है। इनको अपनाने से मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में व्याप्त दोष काफी सीमा तक कम हो सकेंगे एवं छात्रों की विभिन्न योग्यताओं का मापन अधिक वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध ढंग से करना सम्भव हो सकेगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. अस्थाना, विपिन (2005), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन तथा मूल्यांकन चौदहवाँ संस्करण, आगरारू विनोद पुस्तक मन्दिर
2. कपिल, एच. के. (2003), व्यवहारपरक विज्ञानों में अनुसंधान विधियों, आगरा, हर प्रसाद भागर्व
3. कपिल, एच. के. (1986), सांख्यिकीय के मूल तत्व, आगरारू हर प्रसाद भार्गव
4. कुमारी, रीना (1997), सेवारत एवं गैर सेवारत महिलाओं के बच्चों की अभिवृत्ति एवं उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध–प्रबन्ध, इलाहाबाद शिक्षा शास्त्र विभाग, इ०वि०वि०
5. कौल, लोकेश (2004), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ले, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा० लिमिटेड
6. गैरिट, हेनरी ई0 (1981), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, बाम्बेः वकील – फेफर एण्ड सीमन्स लि०
7. गुप्ता, एस०पी० (2003), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन
8. गुप्ता, उमेश चन्द्र (1999), भूगोल विषय में इण्टरमीडिएट के छात्रों के लिए उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद रू शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विवविव
9. गुप्ता, एस०पी० (2003), साख्यिकी विधियों व्यवहारपरक विज्ञानों में, तृतीय संस्करण, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन
10. थार्नडाइक,ई०एल० (1969), मेजरमेन्ट एण्ड इवैलुएशन इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन न्यूयाकर्रू जॉन विली एण्ड सन्स
11. पाण्डेय, अमित कुमार (2004), कक्षा–11 के छात्रध्छात्राओं के लिए वाणिज्य विषय में निष्पत्ति परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण, एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबादरू शिक्षाशास्त्र विभाग, इला वि. वि.